"गुरमुख नाम"

• निवली करम – भुअंगम भाठी – रेचक पूरक कुमभ करै । बिन सतिगुर किछ सोझी नाही – भरमे भूला बूड मरै । अंधा भरिआ भर-भर धोवै – अंतर की मल कदे न लहै । नाम बिना फोकट सभ करमा – जिउ बाजीगर भरम भुलै ।

अर्थः- अज्ञानी अंधे मनुष्य प्रभू का नाम बिसार के - निवली कर्म करता है, कुण्डलनी नाड़ी से दसम द्वार में प्राण चढ़ाता है, श्वास उतारता है, श्वास चढ़ाता है, श्वास (सुषुम्ना में) टिकाता है । पर इस भटकना में गलत

रास्ते पर पड़ कर (इन कर्मों के चक्करों में) फस के आत्मिक मौत सहेड़ लेता है । सतिगुरू की शरण पड़े बिना सही जीवन की इसको समझ नहीं पड़ती । अंधा मनुष्य विकारों की मैल से भरा रहता है, बार-बार गलत रास्ते पर पड़ कर और विकारों की मैल से लिबड़ता है (निवली कर्म आदि के द्वारा) यह मैल धोने का यत्न करता है, पर (इस तरह) मन की मैल कभी नहीं उतरती । (ये रेचक, पूरक आदि) आरे ही कर्म परमात्मा के नाम के बिना व्यर्थ हैं । जैसे किसी मदारी को देख के (अंजान मनुष्य) भुलेखे में पड़ जाता है (कि जो जो कुछ मदारी दिखाता है सचमुच उसके पास मौजूद है, वैसे ही कर्म-काण्डी मनुष्य इन नाटकों-चेटकों में भुलेखा खा जाता है ।

- भरीऐ हथ पैर तन देह । पाणी धोतै उतरस खेह ।

अर्थः- अगर हाथ या पैर या शरीर मैला हो जाए, तो पानी से धोने से वह मैल उतर जाती है ।

- अंतर मैल जे तीरथ नावै - तिस बैकुंठ न जानां । लोक पतीणे - कछू न होवै - नाही राम अयाना ।

अर्थः- अगर मन में विकारों की मैल (भी टिकी रहे, और) कोई मनुष्य तीर्थों पर नहाता फिरे, तो इस तरह उसने स्वर्ग में नहीं जा पहुँचता; (तीर्थों पर नहाने से लोग तो कहने लग पड़ेंगे कि ये भगत है, पर) लोगों के पतीजने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि परमात्मा (जो हरेक के दिल की जानता है) अंजान नहीं है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"